



१३ नमः श्री ३ धर्मो भूतवाणी च त्रय ॥ १ ॥
अभाद्यदलदायिना वागमल्या संगम (हमधन
निर्ध नक्र कना गवाजा नमः शुभ ॥ १ ॥
मावदालिभ वागमल्या संगम सादि निर्ध
भाम सिखिना गवाजा नमः शुभ ॥ २ ॥ मनि

वादिना वागमल्या वृद्धभवा संगम शंकव
निर्ध ईरवया वना गवाजा नमः शुभ ॥ ३ ॥
वाङ्मर्था वागमल्या संगम वाकनिर्ध सवुः
यना गवाजा नमः शुभ ॥ ४ ॥ विमवा सल्या
कहमवल्या संगम मनावमनिर्ध क्विकनाग

वाङ्मयभाष्यम् ॥ ५ ॥ कस्यमावल्यां कस्यव
ल्यां संगम निमग्ननिर्ध अथवात्रनागवाङ्मयभा
ष्यम् ॥ ६ ॥ सवर्धवल्यां कस्यवल्यां संगम नि
धानकनिर्ध नशायनदनागवाङ्मयभाष्यम् ॥

न ॥ यागनामिकं कस्यवल्यां संगम ज्ञान
निर्ध वामकिनागवाङ्मयभाष्यम् ॥ ७ ॥
वागमल्यां कस्यवल्यां संगम ज्ञाना सवर्ध
नि संगम विनागनिर्ध ववर्धनागवाङ्म
यभाष्यम् ॥ ८ ॥ वागमल्यां नववर्ध

संगमं यमादतिथि यद्गनागवाजानभास्तु
न॥ १० ॥ वागमर्था वाचमर्था संगमं स
वृत्तनतिथि महायद्गनागवाजानभास्तुन॥
११ ॥ वागमर्था यरामर्था संगमं जयतिथि
श्रीकाकिनागवाजानभास्तुन॥ १२ ॥ ॐ ॥

१३ ॥ अनन्यवागमकिन्नक कर्कोटक यद्गम
हायद्गम शिवपालकलिक ववृत्तयावदव
निगहादवनी भामसिखिदद्वधवमहाद
मुधव अयवाव कुलनदीयनद सागर
महासागर अनवरक्त महानय श्रीका

किमहाकाकि सत्रयमहासत्रय रुडादिक
महादत्र किमिशमहामिनि आगच्छागच्छ
महानागमधियनया रुडवस्त्रदानयः
नि अमुकमः ०० रुडवस्त्रदानयः
विष्णुर्देवी च आयु आवाग्य गीवदधन

आज्ञाययनिहूनरुं रुड अमुकमिहृत्वादा
॥ १००॥ ॥ १००॥ ॥ १००॥ ॥ १००॥
यव१ रुव१ हि वि१ रुं रुं १००॥ १००॥
घन१ धि वि१ धु न१ रुव१ नि वि१ रुव१ रुव१
व१ व१ व१ रग्नि दान स ह्य य कि मष्टिक द

लिप्त. कल २ गय २ रु ग व द सा मा दि त्य ऊ म
व नु द क वें ल व क्रे द ध न अ रि द व ग ना
ह्य चि त च व न क म रा य अ र्घ्य यु नि दृ स्ताः
हा ॥ ॐ ॥ ॥ १३ ॥ न मा वृ द्धा य ॐ ह्य रु
ग व न अ हं म म क्क वृ द्ध वि शो व न द सं य नो

ग रा न ना क वि द न रु व पु न स्व द म्मा सा च धिः
सा म्मा सा च द वा ना अ ना ग म ना अ म न र्वा
ना अ वृ द्धा रु ग वा न ॐ दं स्व यं शु चं त्य अः
य यु नि दृ स्ता हा ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ १४ ॥
१३ अ य शी म न् शा क्क सिं ह न थ म ग न स्य वृ द्ध

कुरु रुद्रकल्प वेधमदना कथ हिमवनय
वैमवाहायात्वरुचरवर्षद कलिङ्गा ऊ
शुदिष्टा वा शुकिङ्कुर आकावरुयुधरु
मिनाया नदहा वागमहाया वायुवाका
ना के भवत्यामा यश्चिमकुर संखनशा

उरुचक्रा एषा पृष्ठशिखिवय खदुजया
रुमिशाला अनुकदवाययसु न श्री ३ स्व
ययुवेत्यस निष्पन्ना ॥ ॥ ० ॥
रुमकक्षतायचक्रता वायुस्वनिघाध्वरु
किस्वाहामा सखमा ऊहास्वलिना वाजकि

धः॥ माथि मायावा ज कता कावा दवा कडा मा मास सिगु
रुवा रव सि कर्ष वि न सा रा न रव ति थ न सा या रव स
मथ कवा ज कर्षा रा क द व सि गु न क ता र रव द
सा य मा न द्रा र्श सा रा दाना ग न सा य व ड र्श रा वा
वा द्रा का द्रा म सि गु न क ता र रव द्रा ज व द्रा म

नृपक सत्रा



रखानमन शुक्ति ॥ ॐ मुनश्महा मनखाहा ॥ ॐ नभारुग
वक्तुमर्षदुर्गमियत्रिमाधनवाजायकथागनायाहक
संभक्तं वृद्धाय ॥ कथथा ॥ ॐ ह्यधनश्चिह्नधनशुद्ध
विशुद्ध दिवगनशुभकनामध्याय सर्वकम्पावयह
विह्यधनखाहा ॥ ॐ यथाकथगना नित्यमनूहवा

यां सम्यक्तं वाहो कथाहंय विह्यमीकथयविह्यमयामि ॥
विधुनसर्वसंकुयं तावासावविदक्तिन ह्यक्तसिंहनम
१स्यामि शुद्धयेकति निर्मलं समुद्धयुधुवीकारं स
वृद्धकनूधम्यहं समनरुदसाकात्र साक्तसिंहं नमा
मिहं ॥ अनेन वाहं कुशलकर्मना स्वयं वृद्धनविद

ललाकदहाय धर्मजगन्नाथाय भावसत्त्वां वद्मद्
त्वयीति मां नित्यं मनूक्यायां सम्यक्वालो नथादय
विधामिनं यवीक्षामयामि ॥ ॥ इत्युक्त्वा मित्यमहा
यात्रात्यक्त्वा वेकनदीनदीत्यक्त्वा मां माय संयन न व
द्वं यनमा मिहं ॥ ॐ ॥ नमः स्कंधाक्षसिंहाय ध

मचक्रयवर्ककः ॥ नैधुर्कं जगत्सर्वं धर्मं सर्वदुःखं
किं ॥ नमः स्कंधाक्षीयधर्मधुस्वरावनः ॥ सर्वसत्त्वा
दिनार्थय आत्मनस्त्वय दहाकः ॥ नमः स्कंधाक्षीयस
मनात्त्वरावने ॥ नैधुर्कं स्मिन् सर्वम शिष्यकयदा
यकः ॥ नमः स्कंधाक्षीयस्वरावययवयिरः ॥ आस्थाः

सयनिसखेषु धमामृकयवषहो॥नमः॥रुविस्वशीष
खरावदृकमनस्तिनः॥विस्वकर्मकयाक्रयांसत्वानां
॥रुविस्वशीष॥नमः॥रुविस्वशीषकंधुर्कमरायय
॥सर्वसखेषुआयषुसखेदृष्टाकविष्वाकि॥नमः॥रुवि
रुविस्वशीषविन्नामहिधुर्कधरः॥दानसर्वसत्वानां

वासायवियुत्रयन्॥नमः॥रुविस्वशीषायकंधुर्कधरः
वदुमावववरुयसत्वानांवाधियायन॥नमः॥रुवि
शीषुआनयन्कंधुर्कधरः॥नमः॥रुविस्वशीषाय
कंधुर्कधरः॥लाभ्यामालाकथागीगानुह्यादयाश्च
मुचय॥ध्यादीयावयुध्यावगन्धादवीनमः॥रुवि

वमल्लिङ्गनाथस्य शुद्धाया मस्तु ८६॥ शुद्धान्नस्य
वनिज्जामिद्वान्नया लनमस्तु ॥ वदिको यो लिङ्गनाथः
च तत्त्वा विद्वा नया क्षमः ॥ मुदिको यो दक्ष लिङ्गनाथः
स त्वनमस्तु ॥ वाक्क्षेत्रोद वच्चा दे ला कया ल वहु दिक्ष
॥ अग्नि वाक्क्षेत्र वायुश्च रुमा धिय किन मास्तु ॥ १०॥

१३ स्वस्वा गता यूयं मिदं मासन माधु
ना ॥ ॥ नत्ता रावना ॥ नत्ता आकाक्षस्य
सर्वदवनादि लिङ्गनाथना शुद्धा वत्तान
यवना देवाना राम स वायका गच्छ वाम
होत्रग रुमायना यि क्षत्राया ४ सर्वत्राग

एष यूजयन् सर्वयूजाय यूजकं बुद्धानां
 युगवर्त्तकः ॥ अहो बुद्ध २ साधु बुद्धश्च कः
 नारु मः सर्वदुर्गकिय निमः ॥ अथ सत्त्वानां
 वाधियायानं नत्रक नित्यकथं दुर्दोषाय
 शान्ननामिथ्यदिक बुद्धकानां संगमिया

दिभययुद्धं हृदहृदः ॥ र ग व न नि स्र व ज
स म य स्र व ज व ह म ॥ ३ व र म स्र व ३ ॥
३ स व वि न ह म ध न स व य य न य न थ ह
य म क व ह म ॥ ३ स व वि न स व य य वि
ह म ध नि ह ह ह य य वि ह म न म ॥ ३ स

व वि न ग ट ट ह ॥ य य स्र व न म ॥ ३ स व
वि न स व व र ह वि ह म ध न ह ह ह ॥ य य वि
स र न म ॥ न न य स्र व गि न ह द य म
म काल न व र म ॥ ३ स न २ म ह म न
ह ॥ ३ न थ स व द न नि य वि ह म ध न न ज

य तथ गानाया ह न सम्यक् वृद्धा य न यथ
उं ह म ध न २ वि ह म ध न २ गुं ह वि गुं ह दि व
ग न नाम ध या य स व क म्मा व व ह वि गुं ह
खा हा ॥ उं व ज्ञां कृ ह्म ४ ॥ उं व ज्ञा या हा ह्म ४ ॥
उं व ज्ञा ह्म ह वं ॥ उं व ज्ञा वं हा हा ॥ ॥ यं य

य हा व य ज्ञा ॥ ॥